1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 31 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 जून, 2024 से रविवार 23 जून, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विभिन्न भाषाओं में दयानन्दकृत अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश"

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश महिला इकाई आर्य वीरांगना दल दिल्ली के तत्त्वावधान में

आठ दिवसीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण सम्पन्न

नैतिक शिक्षा, आत्मरक्षा एवं सामाजिक जागृति में महत्त्वपूर्ण है - आर्य वीरांगना दल की भूमिका
- एस.के. शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

ढोंग, पाखण्ड और अंधविश्वास के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष करें आर्य वीरांगनाएं
- सुरेन्द्र रैली, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगी आर्य वीरांगनाएं - सुरेन्द्र आर्य, प्रधान, वेद प्र. मं.उ.प. दिल्ली

आर्य वीरांगनाओं की सक्रियता का आरम्भिक चरण है - आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर
- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली सभा

महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज की प्रेरणाओं के अनुसार नारी जाति के सम्मान और उत्थान के प्रति समर्पित है। आर्य समाज जहां एक ओर महिला सशक्तिकरण के लिए कृत संकल्पित होकर निरंतर प्रयासरत है, वहीं दूसरी ओर चरित्र निर्माण और आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर लगाकर उन्हें शारीरिक, आत्मिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने का रचनात्मक कार्य लगातार कर रहा है। इस श्रृंखला में आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश द्वारा दिल्ली आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश की महिला प्रांतीय इकाई के तत्वावधान में 2 जून से 9 जून 2024 तक डी.ए.वी पब्लिक स्कूल रोहिणी सेक्टर 7 के प्रांगण में आयोजित 8 दिवसीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का भव्य समापन समारोह 9 जून 2024 को सायंकाल विधिवत संपन्न हुआ। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री एस के शर्मा जी, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान, श्री सुरेन्द्र रैली जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री, श्री विनय आर्य जी, उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द आर्य जी, दिल्ली के अन्य वेदप्रचार मंडलों, आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री, कार्यकर्ता, सदस्य उपस्थित थे। श्रीमती वीना आर्या जी, डा. श्रीमती उमाशशि दुर्गा जी, श्रीमती शारदा आर्या जी, श्रीमती विभा आर्या जी,

- जारी पृष्ठ 4-5 पर

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2024

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि **15 जुलाई 2024**
ऑनलाइन परीक्षा तिथि 21 जुलाई 2024 11:00 AM IST

आवेदन करने के लिए वेबसाइट **www.aryapragati.com**

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

देववाणी-संस्कृत

सत्य की विजय

वेद-स्वाध्याय

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमो अवति हन्त्यासत्।। - ऋ. 7/104/12
ऋषिः **वसिष्ठः।।** देवता **सोमः।।** छन्दः **विराट्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **सुविज्ञानम्**=उत्तम विशेष ज्ञान को **चिकितुषे**=जानना चाहनेवाले विवेकी **जनाय**= मनुष्य के लिए **सत् च असत् च** = सत्य और असत्य **वचसी** = वचन या ज्ञान **पस्पृधाते**=परस्पर स्पर्धा करते हैं। **तयोः**=इन दोनों में **यत्सत्यम्**=जो सत्य है **यतरत् ऋजीयः**= जौन-सा सरल, अकुटिल, छलरहित है **तत् इत्**= उसी की सोम परमेश्वर **अवति**=रक्षा करता है और **असत् हन्ति**=असत् का नाश करता है।

विनय - मनुष्य जब वास्तविक ऊँचे ज्ञान को विवेक पूर्वक जानना चाहता है, जब वह सत्यज्ञान की खोज में होता है, तब उस विवेकशील पुरुष के सामने सत् और असत् दोनों स्पर्धा करते हुए आते हैं। दोनों उसके सामने अपनी-अपनी श्रेष्ठता दिखाना चाहते हैं, दोनों उसके हृदय पर अधिकार करना चाहते हैं। कभी सत् प्रबल होता है, कभी असत् प्रबल होता है। इस प्रकार देर तक यह स्पर्धा, यह लड़ाई, चलती रहती है। जब उसपर किन्हीं कुटिल और असत्य से काम निकालने वाले लोगों का प्रभाव पड़ता है तब वह असत्यता को ही उत्तम समझ लेता है; परन्तु जब वह सत्यग्रन्थों को पढ़ता है या सच्चे, निष्कपट, पवित्र लोगों के संग में आता है तब सत्य की महत्ता को समझने लगता है। पुनः किसी बलवान् नीतिनिपुण पुरुष का प्रभाव उसे यह सिखला देता है कि संसार में असत्य के बिना काम नहीं चलता है। पुनः कोई महान् सत्यनिष्ठ पुरुष उसे सत्य का पुजारी, सत्य के पीछे पागल बना देता है। इस प्रकार सत् और असत् दोनों प्रकार के वचन (ज्ञान) उसपर प्रभाव जमाने के लिए स्पर्धा करते रहते हैं, परन्तु मनुष्य को यह पता होना चाहिए (और विवेकी पुरुष को यह धीरे-धीरे पता हो जाता है) कि मनुष्य के हृदय में बैठा हुआ सोम परमेश्वर तो सदा सत् की, अकुटिल की ही रक्षा कर रहा है और असत् का नाश कर रहा है। जो लोग इस सत्य से अभिज्ञ हो जाते हैं वे तब सोम की शरण में जाना चाहते हैं और जो सचमुच सर्वोच्च सत्य ज्ञान की खोज में लगे हुए हैं उन्हें इसी हृदयस्थ सोम देव की शरण में जाना चाहिए, तभी उन्हें अपना अभीष्ट मिलेगा, क्योंकि सब भूतों के हृद्देश में बैठे हुए सोम ईश्वर के आश्रय को मनुष्य जितना ही अधिक सर्वतोभाव से ग्रहण करता है, उतना ही उसमें असत्य का नाश होकर सत्य और निष्कपटता बढ़ती जाती है और उसमें सुविज्ञान भरता जाता है, अतः इस सत् और असत् की लड़ाई में मनुष्य जितना ही सोम का आश्रय लेगा, उतनी ही जल्दी उसमें सत्य की विजय होगी और उसे शान्ति मिलेगी। प्रत्येक जीव की इस सत्-असत् की स्पर्धा में जल्दी या कितनी ही देर में अन्ततः सोम परमेश्वर द्वारा विजय तो सत्य की ही होनी निश्चित है, क्योंकि वे सोम सदा सत्य का, सत्य वचन का, सत्य व्यवहार का रक्षण कर रहे हैं और असत्य का, असत्य भाषण का, असत्य व्यवहार का हनन कर रहे हैं।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सोशल मीडिया पर प्रतिदिन बढ़ता अंधविश्वास

अंधविश्वास को बढ़ावा दे रहा है इंटरनेट?

.....जिस देश में कभी ईश्वर की स्तुति, संध्या हवन हुआ करते थे, अब उस देश में आस्था के नाम पर भय बनाकर इतना बड़ा कारोबार खड़ा कर दिया गया है कि आम जनमानस अब कब किसका शिकार बन रहा है किसी को पता नहीं। पति को छोड़कर घर से भागी एक महिला ढोंग और पाखंड के दम पर रातों-रात राधे माँ बन जाती है तो आसिफ नाम का मुसलमान आशु महाराज बनकर टीवी मीडिया के जरिये करोडो में खेलने लगता है। ना केवल खेलता है बल्कि हिन्दू महिलाओं की आबरू भी लूटता है। जब पकड़ा जाता है तो कहता है कि हिन्दू पागल हैं किसी पर भी विश्वास कर लेते हैं इस कारण वो हिन्दू बाबा बना।

.....कभी शहर में घूमते हुए तो ऐसे बाबाओं के विज्ञापन आपने भी खूब देखते थे जिनमें लिखा होता है कि 'चौबीस घंटे में खोया प्यार वापस पाएं' कारोबार में रुकावट, बेरोजगारी, सौतन और दुश्मन से छुटकारा ऐसी किसी समस्या का 100 प्रतिशत गारंटीड समाधान चाहिए तो कॉल करिए। इस जाल में जाने कितने लोग शिकार बने कितनी घटनाये आपको गूगल पर मिल जाएगी। जिनमें महिलाओं की आबरू तक इन बंगाली बाबाओं ने लूटी, ना केवल महिलाओं बल्कि उन महिलाओं को ब्लैकमेल करके उनकी किशोर नाबालिग बच्चियों तक को शिकार बनाया। .....

रात का घुप अँधेरा, एक गाड़ी सड़क पार करती एक सफेद मानव आकृति। गाड़ी में बैठा कोईआदमी बोल रहा होगा ये देखो भाइयों जो लोग कहते हैं कि भूत नहीं होते वो ये सामने देख लें। इंटरनेट पर आपको ऐसी कई रील्स या विडियो मिल जाएंगी। किसी में मेज का अपने आप खिसक जाना हो या कोई हिलती कुर्सी दिखाई देगी। इसके अलावा कुछ विडियो में कोई माता का रूप धारण कर चिलम या सिगरेट फूंक रही होती है, या कोई बाल बिखेरकर खुद के सिर माता आ जाने का दावा कर रही होती है। कोई झाड़ू या मोरपंख से झाडा लगा रही होती है या फिर कोई पीत या गेरुए वस्त्र धारण कर किसी बीमार महिला पर अत्याचार कर रहा होता है। इस क्रम में अगर देखा जाये तो सबसे आगे पंजाब के ईसाई पादरियों के विडियो सामने आ रहे हैं। जो खुलेआम कैंसर से लेकर मृत इंसान को जिन्दा तक करने के विडियो इंटरनेट के जरिये आम लोगों तक पहुंचा रहे हैं।

कितनी ही विडियो मिलेगी जहाँ मजारों पर लोगों के सिर आये जिन्न भगाए जा रहे हैं। कुछ स्थान पर मंदिरों के नाम पर भूत भगाए जा रहे हैं। चर्च वाला गैंग दुष्ट आत्माओं को भगा रहा है तो माता की चौकी लगाकर अनेकों कथित माताएं सिर आई माताए भगा रही हैं। इन सबको देखकर लगता है जैसे भारत की एक अरब 40 करोड़ जनसँख्या के बीच कोई दो अरब भूत-प्रेत, बुरी आत्माएं, जिन्न-पिचास भी रह रहे हैं। बस उनका आधार कार्ड या वोटर आई कार्ड नहीं है। वरना वो भूत-प्रेत-जिन्न चुनाव भी लड़ रहे होते और सरकार बना और गिरा रहे होते।

जिस देश में कभी ईश्वर की स्तुति, संध्या हवन हुआ करते थे, अब उस देश में आस्था के नाम डर और भय बनाकर इतना बड़ा कारोबार खड़ा कर दिया गया है कि आम जनमानस अब कब किसका शिकार बन रहा है किसी को पता नहीं। पति को छोड़कर घर से भागी एक महिला ढोंग और पाखंड के दम पर रातों-रात राधे माँ बन जाती है तो आसिफ नाम का मुसलमान आसू महाराज बनकर टीवी मीडिया के जरिये करोडो में खेलने लगता है। ना केवल खेलता है बल्कि हिन्दू महिलाओं की आबरू भी लूटता है। जब पकड़ा जाता है तो कहता है कि हिन्दू पागल हैं किसी पर भी विश्वास कर लेते हैं इस कारण वो हिन्दू बाबा बना।

थोड़े समय पहले तक आप बस में सफ़र करते होते थे। कभी शहर में घूमते हुए तो ऐसे बाबाओं के विज्ञापन आपने भी खूब देखते थे जिनमें लिखा होता है कि 'चौबीस घंटे में खोया प्यार वापस पाएं' कारोबार में रुकावट, बेरोजगारी, सौतन और दुश्मन से छुटकारा ऐसी किसी समस्या का 100 प्रतिशत गारंटीड समाधान चाहिए तो कॉल करिए। इस जाल में जाने कितने लोग शिकार बने कितनी घटनाये आपको गूगल पर मिल जाएगी। जिनमें महिलाओं की आबरू तक इन बंगाली बाबाओं ने लूटी, ना केवल महिलाओं बल्कि उन महिलाओं को ब्लैकमेल करके उनकी किशोर नाबालिग बच्चियों तक को शिकार बनाया।

इन्स्टाग्राम पर आपको मसानी बाबा के विडियो देखने मिलेंगे। दिल्ली में माता मसानी चौकी लगाया करता था। महिलाओं के मुंह में अपनी जीभ देकर इलाज करने का दावा करता था। दुखी महिलाओं से सब ठीक करने के बहाने पैसे ऐंठता था फिर मौका पाकर उनका बलात्कार करता था। इतना ही नहीं वह पीड़ित महिलाओं को बाद में ब्लैकमेल भी करता था। बाद में जब कई शिकायत थाने पहुंची तब दिल्ली पुलिस ने द्वारका से इसे गिरफ्तार किया। जब गिरफ्तार नहीं किया था मसानी बाबा ने आसिफ उर्फ़ आसू महाराज की तरह लोगों की आस्था जमकर शोषण किया।

इन दिनों सोशल मीडिया पर एक बाबा के वीडियोज़ काफी वायरल हैं, इनमें वो कभी मोतियाबिंद का इलाज कर रहे हैं तो कभी सिरदर्द का। लेकिन वो इलाज में कोई दवाई नहीं दे रहे हैं। अपने हाथ में पानी लेते हैं, और सामने वाले आदमी की तरफ़ फेंक देते हैं और कहते हैं कि बोलो बगलामुखी मैया की जय बोलिए।

जिन बाबा के ये वीडियोज़ हैं, उनका नाम अमित शर्मा (गुरु जी) हैं। यूट्यूब पर 'मां बगलामुखी गुप्त दरबार' नाम के चैनल पर बाबा से जुड़ी हु वीडियोज़ आप देख सकते हैं। इस चैनल पर दावा किया गया है कि लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी लोगों की बीमारीयों का इलाज नहीं हो पाता है लेकिन बाबा बिल्कुल मुफ्त और कुछ ही मिनटों में इलाज कर देते हैं।

इसके अलावा पहियेदार कुर्सी (व्हीलचेयर) पर बैठा एक दुर्बल सा व्यक्ति अपना सिर पीछे फेंकता है और अपना चेहरा ऐंठने लगता है, उसकी बाहें फड़कने लगती हैं, पैर कांपते हैं। फिर भी सभी की निगाहें उस पर नहीं, बल्कि पंजाब के 'चर्च ऑफ ग्लोरी एंड विजडम' में मिनिस्टर प्रॉफेट बजिन्दर सिंह, या सिर्फ 'प्रॉफेटजी' पर टिकी होती है।

बजिन्दर उस आदमी की रोती हुई पत्नी को उकसाते हैं, 'क्या तुझे यकीन है कि तुम यहां चंगे होकर जाओगे? विश्वास है तुझे? वह सुबकते हुए कहती है, 'हां, मुझे विश्वास है।' इसके बाद बजिन्दर उस कार्यक्रम स्थल पर एकत्रित और मंत्रमुग्ध लग रहे दर्शकों की तरफ तेजी से घूमते हुए उनसे गुजारिश करते हैं, 'हर कोई, अपने हाथ उठाओ और पवित्र आत्मा को अपना काम करने दो।' भीड़ इनके कहे का पालन करती है और बजिन्दर अपना ध्यान वापस व्हीलचेयर पर बैठे व्यक्ति पर केंद्रित कर देते हैं।

- जारी पृष्ठ 7 पर

महर्षि की 200वीं जयन्ती पर आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रहित में उठाए गए मुद्दों की श्रृंखला में

देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों को लेकर उत्पन्न हुई चुनौतियों का चिन्तन

7

प्राकृतिक खेती अपनाइए - जल, जमीन और जीवन बचाइए

हानिकारक कीटनाशकों का उपयोग केवल मिट्टी, स्वास्थ्य तथा जीवन को बाधित नहीं कर रहा है। बल्कि जमीन में रिस-रिस कर जाने वाला पानी जो जीवन की अमूल्य निधि है। वो भी नीचे ही नीचे तबाह होकर जहरीला हो रहा है। आज से पचास साल पहले किसने सोचा था कि पानी खरीदकर पिया जायेगा? किन्तु बेतहाशा हानिकारक कीटनाशकों के प्रयोग से आज हालात ये हो चुके हैं कि तालाब-पोखर आदि का पानी तो जहरीला हो ही चुका है। साथ ही जमीन के नीचे का पानी भी इससे अछूता नहीं रहा है। उसके लिए अब घर-घर वाटर फिल्टर, वाटर प्यूरीफायर बेचे जा रहे हैं।

सत्य घटनाओं पर आधारित यह लेख पुस्तक में दिया गया क्यू. आर. कोड स्कैन करके स्वयं पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाएं।
पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें : www.vedicprakashan.com

'मेरे देश की धरती, सोना उगले-उगले हीरे-मोती'- ये गीत साल 1959 में उपकार फिल्म में दिया गया था। यह गीत एक किस्म से भारतीय किसानों को समर्पित था। साथ ही भारत की मिट्टी का वो गुणगान इसमें किया गया था जो मिट्टी, अन्न, जल, फल समेत आदिकाल से देश के सभी वर्गों को खाद्य की आपूर्ति करती रही है। क्योंकि भारत की आधी से भी अधिक आवादी प्रत्यक्ष रूप से जीविका के लिए कृषि पर निर्भर भी है। किन्तु ऐसा क्या हुआ कि सोना, हीरे, मोती उगलने वाली यह मिट्टी या तो बंजर होती जा रही है या फिर कैंसर जैसे रोग पैदा करने लगी? जिनका या तो इलाज नहीं है या फिर इलाज है तो इतना महंगा कि आम इन्सान उसे सहन नहीं कर सकता।

आज भारत के सन्दर्भ में कई प्रश्न बड़ी तेजी से उभर रहे हैं और यह सवाल है कि भारत का जल, जीवन और जमीन किस तरह बचाए जाएं? यह सर्वविदित है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। आदिकाल से कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। हजारों वर्षों पहले जब अमेरिका, यूरोप व अरब महाद्वीप के लोग भोजन के लिए मांस-भक्षण पर आश्रित थे, तब भारतीय उपमहाद्वीप में पौधे उगाने, फसलें लेने, अनाज पैदा करके भी व्यवस्थित जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था और कृषि के लिए औजार तथा बेहतर तकनीकें विकसित कर ली थी।

सिन्धु नदी के पुरावशेषों के उत्खनन से इस बात के प्रचुर प्रमाण मिले हैं कि आज से हजारों वर्ष पूर्व कृषि अत्युन्नत अवस्था में थी और लोग राजस्व अनाज के रूप में चुकाते थे। भारत के निवासी आर्य कृषि कार्य से पूर्णत: परिचित थे, यह वैदिक साहित्य से स्पष्ट परिलक्षित होता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में कृषि सम्बन्धी अनेक ऋचाएं है जिनमें कृषि सम्बन्धी उपकरणों का उल्लेख तथा कृषि विद्या का परिचय है। स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किसान को सबसे बड़ा सम्मान देते हुए उसे 'राजाओं का भी राजा' बताया, प्राकृतिक कृषि का सन्देश दिया। साथ ही कृषि की उन्नति को ही राज्य देश की उन्नति का मार्ग बताया।

यद्यपि भारत का इतिहास उठा-पटक से जूझा। विदेशी आक्रमण और गुलामी का इतिहास रहा है, किन्तु तत्पश्चात हरित क्रांति हुई। एक ऐसी क्रांति, जिसका सम्बन्ध अत्यधिक उत्पादन से तीव्र वृद्धि करना था। जहाँ हरित क्रांति से पहले मिट्टी के प्रकार को ध्यान में रखकर खेती की जाती थी। यानि दक्षिण में मिर्च-मसालों से लेकर उत्तर भारत में कपास, धान, मक्का, चना, समेत कश्मीर में केसर की खेती तक एक मिट्टी का प्रकार चुना जाता था। वहां हरित क्रांति के बाद कृषि क्षेत्र में रासायनिक तथा बीज के प्रकार पर जोर दिया गया तथा मिट्टी की उर्वरता को रसायनिक खादों विदेशी बीजों पर निर्भरता बढ़ चली।

मसलन उत्पादन बढ़ा! किन्तु भारत की जैविक खेती विदेशी रासायनिक खादों पर निर्भर हो चली। परिणाम आज खेती के लिए कीटनाशक दवाएं आवश्यकता बन चुकी हैं। बड़ी चिन्ता ये है कि इनसे होने वाले लाभ से ज्यादा अब नुकसान हो रहा है। यानि जमीन हमारी, खाद और बीज विदेशी। ''नतीजा आज एक किस्म से खेती गुलाम हो चली है। विदेशी बीज भंडार पहले बीज में खरपतवार बीज का मिश्रण कर भेजते हैं। फिर उस खरपतवार के खात्मे के लिए विदेशी खरपतवार नाशक या कीट नाशक दवाएं बेचते हैं। इन दवाओं के प्रयोग से उत्पादन हुआ अन्न, जब हम प्रयोग करते हैं तो वह कई बिमारियों को जन्म देता है। इलाज के लिए फिर स्वास्थवर्धक दवाओं का आयात भी इन्हीं देशों की दवा कम्पनियों द्वारा किया जाता है।''

यह कोई हमारा अपना अनुमान या शोध नहीं है बल्कि पिछले दिनों ग्रीनपीस ब्रिटेन द्वारा पोषित वैश्विक संस्था अनअर्थ्ड और स्विस एनजीओ पब्लिक आई के विश्लेषण में चौकाने वाली बातें निकलकर सामने आई थीं। भारत सहित दुनिया के 43 देशों में हुए इस अध्ययन के अनुसार, खतरनाक कीटनाशक विकसित देशों के मुकाबले विकासशील और गरीब देशों को ज्यादा नुकसान पहुंचा रहे हैं। भारत में 59 प्रतिशत खतरनाक कीटनाशकों का इस्तेमाल किया जा रहा है। वह ब्रिटेन में यह महज 11 प्रतिशत है।

रिपोर्ट के अनुसार कीटनाशक कम्पनियां मानव स्वास्थ्य या पर्यावरण के लिए उच्च खतरों को उत्पन्न करने वाले रसायनों से हर साल अरबों डॉलर कमाती हैं। इन अत्यधिक खतरनाक कीटनाशकों का बिक्री का अनुपात अमीर देशों की तुलना में गरीब देशों में अधिक पाया गया है।

कीटनाशकों के बाजार में पांच कंपनियों—बेयर, बीएएसएफ, सजेंटा, एफएमसी और कोर्टेवा का प्रभुत्व है। इन कंपनियों ने 2018 में 4.8 अरब डॉलर (345 अरब रुपये) के अत्यधिक खतरनाक कीटनाशक (एचएचपी) उत्पादों की बिक्री की, जो उनकी आय का 36 प्रतिशत से अधिक है।

सिर्फ इतना ही नहीं, आगे असली खेल समझिये! रिपोर्ट में बताया गया था पांच बड़ी कंपनियों द्वारा बिक्री किए जाने वाले कुल कीटनाशक का एक चौथाई मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर रूप से हानिकारक हैं। इनमें कैंसरजन्य तत्त्व शामिल थे।

इसका अर्थ हुआ कि दुनिया को जहरीले कीटनाशकों से सराबोर फसलों के आधार पर औद्योगिक खेती के मॉडल पर टिकाए रखना इन कंपनियों के हित में है। क्योंकि जब जहरीले कीटनाशक खेती में प्रयोग किये जाते हैं तो कुछ साल तो मिट्टी की उर्वरक शक्ति बनी रहती है। किन्तु धीरे-धीरे जमीन या मिट्टी अपनी उर्वरक क्षमता खोने लगती है। तब किसान परेशान होता है तो उन्हें भयंकर केमिकल जहरीले कीटनाशक दिए जाते हैं। उसे लगता है कि अब फिर उसकी जमीन की उर्वरक क्षमता बढ़ चली। किन्तु धीरे-धीरे जमीन बंजर होने लगती है। इसे आसान भाषा में ऐसे समझें कि मान लो, किसी इन्सान को पहले धीमे नशे का आदि बनाया जाये, फिर धीरे-धीरे उसकी नशे की आदत बढ़ती चली जाती है। वो तेज नशे का आदि हो जाता है और अंत में मौत की गोद में चला जाता है।

श्रीलंका इसका सबसे ताजा उदाहरण है पिछले दिनों वहां के आर्थिक संकट में कृषि उत्पादन में कमी का प्रभाव सामने आया। तो साथ ही ये भी सामने आया कि किस तरह अन्तर्राष्ट्रीय ताकतों ने कुछ भ्रष्ट अधिकारियों, दलाल स्वेच्छिक संगठनों की मदद से श्रीलंका की कृषि अर्थव्यवस्था के खिलाफ षड्यंत्र रचा। एक खुशहाल देश को भुखमरी के कगार तथा आर्थिक संकट की ओर धकेल दिया गया। हालात यहाँ तक पहुंचे कि अचानक श्रीलंका सरकार को देश में हानिकारक कीटनाशकों, खेती में उपयोग होने वाले केमिकलों को प्रतिबंधित करना पड़ा तथा अपनी प्राचीन प्राकृतिक खेती की ओर लौटना पड़ा।

आज भले ही भारत खाद्यान उत्पादन के क्षेत्र में लगभग आत्मनिर्भर है। किन्तु जिस तरीके से भारत में हानिकारक कीटनाशकों का उपयोग बढ़ रहा है, आने वाला समय श्रीलंका जैसे हालात उत्पन्न न कर दे इसका साफ संकेत मिल रहा है। क्योंकि श्रीलंका की तर्ज पर ही अन्तर्राष्ट्रीय ताकतें भारतीय कृषि व्यवस्था को बिगाड़ने का षड्यंत्र रच रही हैं।

हानिकारक कीटनाशकों का उपयोग केवल मिट्टी, स्वास्थ्य तथा जीवन को बाधित नहीं कर रहा है। बल्कि जमीन में रिस-रिस कर जाने वाला पानी जो जीवन की अमूल्य निधि है। वो भी नीचे ही नीचे तबाह होकर जहरीला हो रहा है। आज से पचास साल पहले किसने सोचा था कि पानी खरीदकर पिया जायेगा? किन्तु बेतहाशा हानिकारक कीटनाशकों के प्रयोग से आज हालात ये हो चुके हैं कि तालाब-पोखर आदि का पानी तो जहरीला हो ही चुका है। साथ ही जमीन के नीचे का पानी भी इससे अछूता नहीं रहा है। उसके लिए अब घर-घर वाटर फिल्टर, वाटर प्यूरीफायर बेचे जा रहे हैं।

जबकि एतिहासिक संदर्भ में देखा जाये तो ऐसा नहीं है कि भारत में खेती की लिए खाद का उपयोग नहीं किया जाता था। प्राचीन ग्रंथों में खाद का भी संकेत मिलता है। जिससे प्रकट है कि अधिक अन्न पैदा करने के लिए लोग खाद का भी उपयोग करते थे। किन्तु वह खाद सूखी पत्तियों, गाय के गोबर, यज्ञों की भस्म आदि के रूप में उल्लेखित है। तब मनुष्य स्वस्थ एवं दीर्घायु होते थे।

- शेष पृष्ठ 7 पर

पुस्तक परिचय

भारत के परिवर्तन और परिवर्तन क्रांति के सत्य की गहराई और सच्चाई

जानने के लिए अवश्य पढ़ें

परिवर्तन

(परिवर्तन आता नहीं - लाया जाता है।)

-: लेखक:-

विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

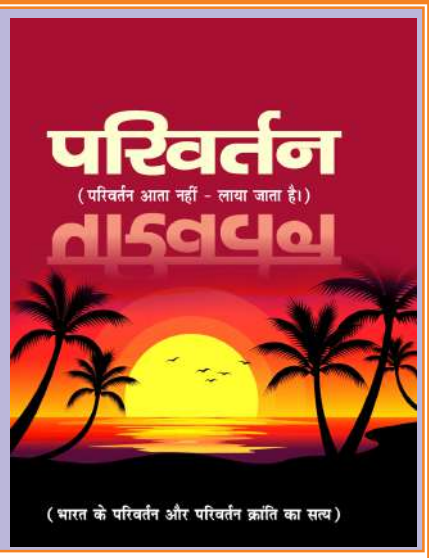

इतिहास अपने आपमें उस कठोर पत्थर की भांति है जिसके ऊपर चाहे जितनी धूल पड़ती रहे, जमती रहे, वह दिखना बन्द हो जाए, उसकी कल्पना भी कोई न कर सके कि इस मिट्टी के नीचे कोई पत्थर होगा। पर जब कोई खोजी, यह जानकर कि यहां एक मजबूत चट्टान थी और उस धूल-मिट्टी के ढेर को हटाना शुरु करेगा तो एक समय ऐसा अवश्य आएगा कि वह धूल-मिट्टी हटाकर उस चट्टान को खोज लेगा। काले बादलों के आ जाने पर सूरज की रोशनी कुछ समय के लिए कम हो जाती है, पर समाप्त नहीं होती। ठीक वही स्थिति ऋषि दयानन्द के जीवन, उनके कार्यों और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यों को लेकर भी रही। इतिहास लेखकों द्वारा या खासकर पाठ्य पुस्तकों में उनके जीवन-कार्यों को जिस तहर सम्मान/स्थान दिया जाना चाहिए था, वह कभी नहीं मिल पाया, जिसके चलते एक बड़ा वर्ग उस जानकारी से वंचित रहा और एक वर्ग ने उनकी कुछ बातों को नकारात्मक रूप में बताने के लिए भरपूर प्रयत्न किया, परन्तु उन जैसे महान् तेजस्वी व्यक्तित्व का जिस प्रकार से परिचय समस्त मानव जाति के कल्याणार्थ होना चाहिए था, वह नहीं हो सका। उनके शिष्यों ने अपनी पूरी शक्ति उनके आदेशानुसार किए जाने वाले कार्यों में झोंकी, परन्तु प्रचार में वे कहीं पीछे ही रहे।

समय कभी-कभी अपने आप अवसर प्रदान करता है। उस महान् ऋषिवर की 200वीं जयन्ती शायद ऐसा ही अवसर है। आने वाला समय हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, समय के साथ-साथ चुनौतियां भी। अत: उनका सामना हम बेहतर तरीके से कर सकें, इसके लिए जरूरी है कि हम कुछ समय अपने अतीत में जाएं और विचारपूर्वक सोचें कि आने वाले समय की चुनौतियां, क्या 150 वर्ष पूर्व की चुनौतियों से ज्यादा हैं, तो हमें उत्तर मिलेगा, शायद नहीं, ऋषि दयानन्द जी के जीवन/ कार्यों और दर्शन को समझने से पूर्व हमें इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी। प्रस्तुत पुस्तक में इन सारे विषयों पर हम पांच चरणों में विचार करेंगे-

सृष्टि के आरम्भ से

पहला-आदि सृष्टि (सृष्टि के आरम्भ से) महाभारत के युद्ध से पूर्व तक का गौरव काल (5000 वर्ष पूर्व तक का)

दूसरा- महाभारत के युद्ध से कुछ समय पूर्व बनी परिस्थितियां एवं महा भारत के युद्ध के परिणाम।

तीसरा- महाभारत के पश्चात् से 18वीं और 19वीं सदी तक का भारत।

चौथा- महर्षि दयानन्द जी के समय की परिस्थितियां और उनके द्वारा किया गया परिवर्तनकारी कार्य।

पांचवां- वर्तमान युग की उन चुनौतियों/समस्याओं की चर्चा और समाधान के तत्व जो हमारे मूल अस्तित्व को पूरी तरह समाप्त करने को तैयार हैं।

पुस्तक के अन्त में विशेष परिशिष्ट भी दिए गए हैं, जो विषय के विस्तार में सहायक होंगे-

(1) महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज का विश्व में फैला वर्तमान संगठन और सेवा कार्य।

(2) महर्षि दयानन्द के शिष्यों की श्रृंखला का संक्षिप्त परिचय।

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

प्रथम पृष्ठ का शेष

चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण दीक्षान्त समारोह

प्राचार्य श्री राजवीर कौर जी एवं आर्य वीरांगना दल की अन्य अनेक अधिकारियों का कुशल नेतृत्व प्रशंसनीय सिद्ध हुआ।

शिविर का उद्घाटन समारोह

5 जून 2024 को इस 8 दिवसीय शिविर के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डॉ. उमाशशि दुर्गा जी ने की। इस अवसर पर शिविर की संचालिका श्रीमती शारदा आर्या जी, मुख्य अतिथि, डॉ. रचना चावला जी, आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश के महांमत्री श्री बृहस्पति आर्य जी ने प्रेरक उद्बोधन दिए। संराक्षिका श्रीमती वीना आर्या जी, मंत्राणी श्रीमती विभा आर्या जी ने अतिथियों का स्वागत, सम्मान एवं कुशलता पूर्वक मंच संचालन किया। उद्घाटन कार्यक्रम में शिक्षक, शिक्षिकाओं सहित आर्य समाजों के अधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

भव्य समापन समारोह

9 जून 2024 को सायंकाल इस 8 दिवसीय आर्य वीरांगना दल के शिविर का भव्य समापन समारोह अपनी अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ। जिसमें सभी आर्य वीरांगनाओं ने संगीत की धुन पर बहुत ही सुंदर तरीके से अपने शरीर को सुदृढ़ बनाने के लिए सर्वांग सुंदर व्यायाम के विभिन्न अंग प्रस्तुत किए, सूर्य नमस्कार के 12 स्टेप एक साथ पूरी तन्मयता के साथ सामूहिक रूप से सफलतापूर्वक प्रस्तुत किए। नियुद्धम, लाठी का अभ्यास, योगासन और स्तूप की रचना अपने आप में अद्भुत और अनुपम सिद्ध हुई । आज अत्यधिक गर्मी होने के बावजूद सभी वीरांगनाओं का उत्साह, उमंग और उल्लास अपने आप में चरम पर था। इन 8 दिनों में जो कुछ भी उन्होंने अपनी शिक्षिकाओं से सीखा था उसे प्रस्तुत करने के लिए सभी अग्रसर थे। वीरांगनाओं ने कठिन से कठिन आसन मलखम पर सरलता से किए।

महानुभावों के उदबोधन एवं आर्य वीरांगनाओं ने ली प्रतीज्ञा

समापन समारोह में जहां एक तरफ शारीरिक प्रशिक्षण के प्रदर्शन का कार्यक्रम चल रहा था, वहीं महर्षि दयानंद की महिमा का बखान करते हुए सुंदर भजन भी प्रस्तुत किए गए। राष्ट्रभक्ति के भजन का सामूहिक गान अपने आप में अत्यंत सारगर्भित और प्रेरक सिद्ध हुआ। आर्य वीरांगनाओं ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती का उपकार हम कभी नहीं भूलेंगे और उनकी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री सभा के महामंत्री श्री एस. के. शर्मा ने वीरांगनाओं को देश-धर्म समाज सेवा तथा आत्मरक्षा की प्रतिज्ञा कराई और विशेष संदेश में कहा- आज के परिवेश में युवा भटक रहे हैं, नैतिक शिक्षा, आत्मरक्षा, व सामाजिक जागृति में आर्य वीरांगनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली जी ने वीरांगनाओं को पाखण्ड, व सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध संगठित होकर संघर्ष करने का अह्वान किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने अपने उदबोधन में कहा - महर्षि दयानंद की 200वीं जन्म जयन्ती पर आगामी वर्ष 2025 में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नई दिल्ली में विशेष सम्मेलनों के बडे आयोजन होंगे। जिसमें हजारों आर्य वीर-वीरांगनाओं को सेवा, सामाजिक नेतृत्व के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा। वीरांगनाओं के ये रचनात्मक शिविर उनकी एक शुरूआत हैं।

शिविर में वीरांगना दल की शिक्षिकाओं आशु आर्या, प्रधान शिक्षिका, कोमल मंडल, मांझी, पायल, कुसुम, कोमल, काजल, राधा आदि के निर्देशन में योगासन, लाठी, जूडो-कराटे, नान चाक, लाठी, भाला, तथा वैदिक यज्ञ- योग, स्वाध्याय, बौद्धिक ज्ञान का विशेष प्रशिक्षण दिया गया।

शिविर को सफल बनाने में संरक्षिका वीना आर्या, डा. रचना चावला, हविषा आर्या, आदर्श मेहता, विजय रानी शर्मा, आर्य वीर दल, दिल्ली के महामंत्री, श्री बृहस्पति आर्य, संचालक श्री जगवीर आर्य, डी.ए.वी. स्कूल सै. 7 रोहिणी के चैयरमैन श्री आर. के. सेठी, वाईस चेयरमैन श्री अजय सहगल, प्रधानाचार्या राजबीर कौर, डॉ. उमा शशि दुर्गा, पुष्पा महावर, हर्षा आर्या, शालिनी आर्या, कौशल्या, सुधा आर्या, ऋतु तनेजा, वंदना शर्मा, राधा आर्या, तथा रोहिणी, सरस्वती विहार, प्रशांत विहार, आदर्श नगर, पंजाबी बाग, प्रशान्त विहार तथा समस्त दिल्ली की आर्य समाजों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

इस अवसर पर विजेता आर्य वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। सर्वश्रेष्ठ वीरांगना नैना, अंजलि सहित, राधिका ठाकुर, अनन्या, स्नेहा, सुषमा, साक्षी शर्मा, रूपाली, प्रियंका, वाणी, मधु, संथाली, वर्षा, संजना, श्रुति आर्या, काजल, खुशी व अन्य प्रतिभाशाली आर्य वीरांगनाओं को पुरस्कार से उपस्थित अधिकारियों ने सम्मानित किया। व्यायाम प्रदर्शन, बौद्धिक, अनुशासन और सेवा साधना आदि में विजयी वीरांगनाओं और शिक्षिकाओं को उपस्थित सभी अधिकारियों ने प्रमाण पत्र प्रदान किए। मंच संचालन अपने आप में अत्यंत प्रेरणा प्रद, सारगर्भित और कुशलतापूर्वक किया गया। प्रेम सौहार्द के वातावरण में यह रचनात्मक कार्यक्रम संपन्न हुआ। डी.ए.वी स्कूल सै.7 रोहिणी की ओर से सभी महानुभावों का धन्यवाद किया।

- *जारी पृष्ठ 5 पर*

समापन एवं दीक्षान्त समारोह के अवसर पर आर्यवीरागनाओं को आशीर्वाद प्रदान करने के लिए मंचस्थ सर्वश्री सुरेन्द्र आर्य, सुरेन्द्र रैली, ओम प्रकाश आर्य, एस. के शर्मा, अरुण प्रकाश वर्मा, हरिओम बंसल, विनय आर्य एवं अन्य महानुभाव तथा आर्य वीरांगना दल के अधिकारीगण

दीक्षान्त के अवसर पर आर्य वीरांगनाओं को शपथ ग्रहण कराते श्री एस. के. शर्मा जी एवं परेड़ निरीक्षण करते श्रीमती शारदा आर्या जी

मंच संचालन करती श्रीमती विभा आर्या जी, अपने अनुभवों को साझा करती शिविरार्थी एवं भजन प्रस्तुत करती आर्य वीरांगनाए

आर्यवीरांगनाओं द्वारा व्यायाम एवं शिविर में सीखे आत्मरक्षा प्रशिक्षण स्तूप, सर्वांग सुन्दर, सूर्य नमस्कार, मलखम- लाठी संचालन का प्रदर्शन

आर्ष गुरुकुल एटा में नये विद्यार्थियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

कुलाधिपति डॉ. श्री वागीश आचार्य, कुलपति प्रो श्री ओमनाथ बिमली, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के प्रो श्री सुरेन्द्र कुमार, डॉ. श्री सुरेश चन्द्र शास्त्री, प्रो. श्री विनय विद्यालंकार, श्री संदीप शजर, डॉ. श्री अवनीश कुमार, ब्र श्री शिवस्वरूप, डॉ. श्री हरिदेव आर्य, श्री धर्मवीर शास्त्री, डॉ. श्री वेदप्रकाश, डॉ. श्री ओमप्रकाश, श्री दिनेश बन्धु आदि वृद्धज्जन व स्नातकों ने नवीन ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद दिया। आचार्य शुचिषद् मुनि जी ने उपनयन एवं वेदारंभ संस्कार की समस्त विधियों को यज्ञ के साथ सम्पन्न कराया। नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती सुधा गुप्ता विशिष्ट अतिथि के तौर पर पधारी और गुरुकुल के सहयोग का आश्वासन दिया। आचार्य श्री विद्याव्रत कुमार, डॉ. भीष्मदेव, श्री योगेन्द्र कुमार, श्री अध्वरेश, श्री ब्रह्मप्रकाश, श्री गणेश शास्त्री, श्री वासुदेव एवं विद्यार्थियों के अभिभावक उपस्थित रहे।

-डॉ. बृजेश गौतम

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की तीसरी दशा

(सन् 1870 से 1875 तक)

गतांक से आगे -

बाबू केशवचन्द्र सेन के जीवन का यदि मनोवैज्ञानिक अनुशीलन करें तो हम उसमें दो-तीन परिवर्तन देखते हैं। प्रारम्भ में उनका झुकाव ईसाइयत की ओर था। उसका पहला प्रकाश 1866 में हुआ, जब मेडिकल कॉलेज में "Jesus Christ-Asia and Europe" इस विषय पर व्याख्यान देते हुए सेन महाशय ने ईसा को ईश्वर का पुत्र और पैगम्बरों का सरदार बताया। यह लहर बहुत वर्षों तक रही और इस लहर में बहते हुए ब्राह्मो नेता का ध्यान योग या तपस्या की ओर नहीं गया। लगभग 7 वर्ष पीछे हम एकदम बड़ा परिवर्तन देखते हैं और 1875 के अन्त में बाबू केशवचन्द्र सेन को तप और योग की ओर झुकता हुआ पाते हैं। स्वामी दयानन्द जी 1873 के प्रारम्भ में कलकत्ता गए थे। इन दोनों घटनाओं में परस्पर सम्बन्ध ढूंढ लेना कुछ कठिन नहीं है। एक बार परिवर्तन आरम्भ हो जाने पर सेन महाशय की गतिशील प्रवृत्ति का बहुत आगे बढ़ जाना स्वाभाविक ही था। भक्तिमार्ग पर उस समय के ब्राह्मो समाजियों ने कैसे-कैसे परिहास किये, यह बताने की आवश्यकता नहीं; परन्तु लेखक की सम्मति है कि केशवचन्द्र के हृदय में जो बहिर्मुख लहर बह रही थी, उसे अन्तर्मुख करने के लिए प्रारम्भिक चोट महर्षि दयानन्द से मिली हो-यह कुछ असम्भव नहीं है।

यह मानने में कोई संकोच का कारण नहीं है कि कलकत्ता में बाबू केशवचन्द्र सेन और ब्राह्मो समाज के कार्य का अनुशीलन महर्षि जी के कार्यक्रम पर भी कुछ कम प्रभाव उत्पन्न करनेवाला नहीं हुआ। यह मानी हुई बात है कि महर्षि जी ने सर्वसाधारण के लिए आर्य भाषा में व्याख्यान देना बाबू केशवचन्द्र सेन के कहने पर ही प्रारम्भ किया था। इससे पूर्व वह संस्त में ही व्याख्यान देते थे। अब तक प्राय: महर्षि जी कौपीन मात्र रखते थे, व्याखयान के समय भी यही वेष रहता था। बाबू केशवचन्द्र सेन के कथन पर महर्षि जी ने व्याखयान देने के समय अन्य वस्त्र धारण करना भी अंगीकार कर लिया। इन दो बातों के अतिरिक्त यह भी कुछ कम महत्त्व की बात नहीं है कि आर्यसमाज रूपी संगठन स्थापित करने का विचार महर्षि जी के हृदय में कलकत्ता जाने के पीछे ही उत्पन्न हुआ। इससे पूर्व किसी संगठन की स्थापना का विचार उदबुद्ध हुआ प्रतीत नहीं होता। ब्राह्मो समाज के सिद्धान्तों और संगठन की अपूर्णता को देखकर महर्षि दयानन्द के हृदय में एक अन्य वैदिक समाज को स्थापित करने की इच्छा उत्पन्न हुई हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

कलकत्ता में महर्षि जी के कई व्याख्यान हुए। एक व्याख्यान सेन महाशय के घर पर भी हुआ। इन व्याख्यानों का बहुत उत्तम प्रभाव होता रहा। उत्साहपूर्ण बंगाली जनता का हृदय महर्षि जी के भाषणों से उछल पड़ा। कलकत्ता से हुगली, भागलपुर आदि स्थानों पर प्रचार करते हुए महर्षि जी फर्रुखाबाद गए। वहां पाठशाला का निरीक्षण करके 25 दिसम्बर 1873 के दिन आप अलीगढ़ पहुंचे। यहां आपने राजा जयकृष्णदास जी के यहां आसन जमाया। अलीगढ़ से होते हुए महर्षि जी मथुरापुरी गए। मथुरा वैष्णवों की राजधानी है। वहां के रंगाचार्य जी तिलक छापधारियों के परम गुरु माने जाते थे। फाल्गुन एकादशी संवत् 1930 के दिन, ब्रह्मोत्सव के समय महर्षि जी ने वृन्दावन में पहुंचकर मलूकदास के राधाबाग में आसन जमाया। यहां पर अनेक मनोरंजक घटनाएं हुईं।

वृन्दावन में ब्रह्मोत्सव के अवसर पर हजारों लोग एकत्र होते हैं। महर्षि जी ने निर्भीकता से मूर्तिपूजा, तिलक छाप आदि का खण्डन प्रारम्भ कर दिया। पौराणिक सरोवर में भारी हलचल मच गई। लोग भागे हुए रंगाचार्य के पास पहुंचे। इधर महर्षि जी ने भी रंगाचार्य के पास एक

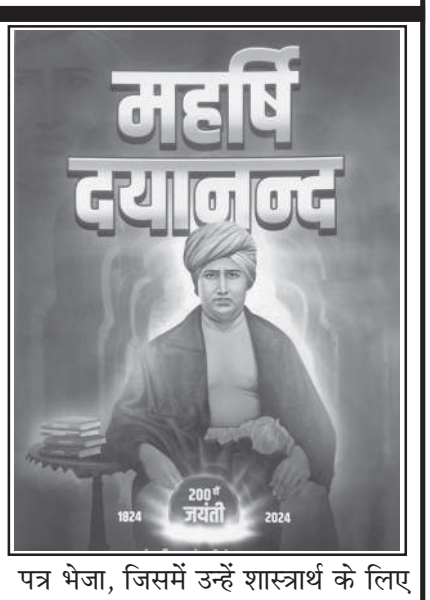

पत्र भेजा, जिसमें उन्हें शास्त्रार्थ के लिए आमन्त्रण दिया। रंगाचार्य जी ने बनारस के शास्त्रार्थ की घटना सुन ही रखी होगी। जिस वीर योद्धा पर काशी के हथियार नाकाम हुए, उस पर मथुरा के निर्बल हथियार क्या असर डाल सकते थे! रंगाचार्य जी ने पहले तो कहला भेजा कि मेले के दिनों में अवकाश न होने से ज्ञास्त्रीय विचार होना कठिन है, और जब मेला हो चुका तो रोगी होने के कारण महर्षि जी के आमन्त्रण को स्वीकार न कर सके।

- क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Third Stage of Reform

From 1870-1875 A.D.

Both the great personalities were busy whole heartedly in the work of welfare of the country. Both were strange oraters. Both had the power to prepare public for any kind of sacrifice. As they had some similarities, similarly they had some differences non similarities also. The following discussion of both show a great dis-similarity in both. One day Mr. Sen asked Swamiji, "People with belief in different religions consider their recognised books as 'Ishwariy' and the final proof. But you consider Vedas as Ishwariya Gyan. How can we know who is right?' Swamiji said, explained so many faults in Bible and Quran and declared Vedas as flawless. 'So he declared Vedic Dharm is True'.

Then Mr Sen said, "It is a pity the English people do not know the unparalleled unique gyan of Vedas, other wise they would have been my god friends."

Swamiji atonce said, "It is a pitty that leader of Brahma Samaj does not know Sanskrit and delivers speeches in the language they do not understand." (From Shrimad Daya Nand Prakash)

The two leaders had this much of difference of opinion. One looked toward east and the other towards west one though of welfare of Arya people of Bharat while the other paid more attention towards Europeans. They differed in many ways in nature also, but those are not to be mentioned here. One's life was very simple and accepted by heart while the other thought of very high standard of life. One desired whole heartedly to tell about the lives and views of great personalities from Brahama to Jemini, while the other wanted to establish new Dharam to be counted in the series of Muhammad and Isa. In Spite of these difference it may not be exaggeration to say that both were quite extra ordinary personalities in their field. Both had the magnetic power to attract people towards them and great ability and symptons of being great personality. Mutual meetings and discussions definitely show extra ordinary results. If we consider it seriously, we will find that their meetings and discussions had great positive effect in both.

If we study Psychology of life of Mr Sen, we observe 2-3 main changes in his life. In the beginning he was interested in Christianity, First proof of that was seen in 1886, when he delivered speech on the topic 'Jesus Christ–Asia and Europe' in Medical College. He declared Isa as 'Son of God' and 'Leader of Paigambers' (Messenger of God). This stage continued for years together and the Brahmo Leader could not think of Yoga and Tapasya. We observe great change after about seven years, In the end of 1875, we find Mr Sen taking interest in Yoga and Tapa. Swamiji visited Calcutta in the beginning of 1973. It is not difficult to co-relate these two incidents. As the change started in the his life, It was quite natural for Mr Sen to move forward fast due to his progressive nature. It is not necessary to mention how much the Brahmo-Samajists joke about the Bhakti Marg. But the writer opines that change Mr. Sen's mind set from outward looking to inward looking was initiated by Swami Deya Nand. This not impossible.

There is no reason to hesitate in admitting that the following and praising work of Babu Keshav Chandra Sen and Brahma Samaj by general public had great effect on Swamiji's program. It is a known fact that Swamiji started delivering speeches in Arya language as per he the advice of Mr Sen. Before that he spoke in Sanskrit only by that time, but started wearing full clothes while delivering speech on the advice of Mr. Sen. Other then those two mutters it is not less important that idea of establishing Arya Samaj was born in Swamiji's heart only when stayed in Calcutta. We do not find any idea of establishing any organisation came into the mind of Swamiji before that. It is possible that after observing incompleteness in the views, rules and organisation of Brahma Samaj, idea of establishing new Vedic organisation.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji.To buy online login www.vedicprakashan.com or contact 9540040339

पृष्ठ 3 का शेष

प्राकृतिक खेती

किन्तु आज तेजी से हानिकारक कीटनाशकों का उपयोग हो रहा है इससे एक तो पिछले कई वर्षों से खेती में काफी नुकसान देखने को मिल रहा है। दूसरा, भूमि के प्राकृतिक स्वरूप में भी बदलाव हो रहे हैं जो काफी नुकसान भरे हो सकते हैं। तीसरा रासायनिक खेती से प्रकृति में और मनुष्य के स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई है।

आज भले ही कीटनाशकों रासायनिक केमिकल का प्रयोग करके कुछ किसान अपनी उत्पादन स्थिति पर इतरा रहे हों। किन्तु अगर हिसाब लगाया जाये तो किसानों की पैदावार का काफी बड़ा हिस्सा उनके उर्वरक और कीटनाशक में ही चला जाता है। दूसरा रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से ये खाद्य पदार्थ अपनी गुणवत्ता खो देते हैं। जिससे हमारे शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है। तीसरा रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से जमीन की उर्वरक क्षमता खो रही है। यह भूमि के लिए बहुत ही हानिकारक है और इससे तैयार खाद्य पदार्थ मनुष्य और जानवरों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल रहे हैं।

एक तथ्य ये भी है कि रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से मिट्टी की उर्वरक क्षमता काफी कम हो जाने से मिट्टी के पोषक तत्त्वों का संतुलन बिगड़ जाता है। ऐसे इस घटती मिट्टी की उर्वरक क्षमता को देखते हुए जैविक खाद उपयोग जरूरी हो गया है क्योंकि प्राकृतिक खेती में ऐसा नहीं है। अगर किसान गाय का पालन करता है तो उसके परिवार को शुद्ध दूध मिलेगा। साथ उसके गोबर की खाद के प्रयोग करता है तो उसे रासायनिक खाद नहीं खरीदने पड़ेंगे। तीसरा उत्पादित अनाज से लेकर सभी फसल रोग रहित होगी और भूजल भी हानिकारक नहीं होगा। भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है।

सिर्फ इतना भर नहीं है कि फसलों की उत्पादकता में वृद्धि होती है। साथ ही जिस रासायनिक खाद के आज हमारे किसान विदेशी कम्पनियों के भरोसे हैं उल्टा वही किसान जैविक खाद के आपूर्तिकर्ता बन सकते हैं। रही बात पानी की तो भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती चली जाती है। साथ ही भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होता है। पर्यावरण की दृष्टि से सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि भूमि के जलस्तर में वृद्धि होती है। मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है। कूड़े-कचरे का उपयोग, खाद बनाने में होने से बीमारियों में कमी आती है।

यही सब कारण है कि अंतर्राष्ट्रीय ताकतें नहीं चाहती कि भारत अपने गौरवान्वित पूर्व कालखंड की कृषि आधारित बड़ी अर्थव्यवस्था बन पाए। इस कारण आज मिट्टी और उससे रिसते पानी को जहरीला बनाया जा रहा है। कल जब यह मिट्टी बंजर, पानी जहरीला और जीवन बीमारियों से घिरा होगा। सोचिये! तब किसका मुनाफा होगा? हम किस पर निर्भर होंगे? इसलिए जिस तरह किसी देश को सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषाई आधार पर गुलाम बनाया जाता है। उसी तरह आज देश की रासायनिक खाद के प्रयोग से मिट्टी को बंजर बनाकर हमें रोटी तक के लिए गुलाम बनाने का सिलसिला काफी वर्षों से चल रहा है। इसलिए आज ये समझना बहुत जरूरी है कि अगर हम प्राकृतिक खेती की ओर न लौटे तो आगे चलकर यही मिट्टी सोना, हीरे, मोती के बजाय सिर्फ जहर उगलती दिखाई देगी। अगर किसान मजबूत होगा तो देश मजबूत होगा ही।

महर्षि दयानन्द ने स्वयं किसान को सबसे बड़ा सम्मान देते हुए उसे राजाओं का राजा बताया और प्राकृतिक कृषि की वकालत भी की, साथ ही कृषि की उन्नति को ही राज्य (देश) की उन्नति का मार्ग बतलाया था।

समाधान—प्राकृतिक खेती कृषि उत्पादन का एक अंग है जो देखा-देखी बहुत अधिक प्रचलन में आरम्भ होता है। यानि जब एक किसान की पैदावार अच्छी होती है तो अनेक किसान इससे प्रेरित होते हैं और वह भी उसी प्रयोग को दोहराते हैं जिससे अच्छी फसल या पैदावार हो।

आमतौर पर विदेशी कम्पनी विज्ञापन इस बात का विश्वास दिला बैठे कि रासायनिक खेती अच्छी उपज देती है जबकि उपरोक्त आंकड़े स्पष्ट हैं। अत: किसानों एवं उनसे जुड़े संगठनों को आगे बढ़कर आर्य समाज की इस मुहिम में स्वयंसेवक बनकर कृषि खेती, किसानी से जुड़े सभी किसान भाईयों को यह सन्देश जरूर दें कि आने वाली फसल और नस्ल दोनों ही प्राकृतिक खेती से उन्नत बनाई जा सकती है।

प्राकृतिक खेती से पैदा किये गये उत्पाद ही अधिक से अधिक खरीदें, फल-फूल, सब्जी-अनाज वाले से इसकी डिमांड करें। लोगों को इसके विषय में अवगत कराएं। आपसी चर्चा में एक चर्चा यह भी जरूर करें। खुद भी घर के गमलों में घर के कचरे की खाद का ही प्रयोग करें। वरना आज रासयनिक खाद कल उससे होने वाली बीमारी की दवाई मांगते रह जायेंगे। आओ, मिलकर साथ चलें इस समाधान से एक दूसरे का ज्ञानवर्धन करें।

बाजार का एक सामान्य नियम है कि जिस वस्तु की मांग बढ़ती है उसका उत्पादन अपने आप बढ़ता चला जाता है। अत: जैसे-जैसे प्राकृतिक खेती से उत्पन्न अन्न, फल, सब्जी की मांग बढ़ेगी वैसे ही उत्पादन भी बढ़ जाएगा। इसे पढ़ने वाले किसान प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दें और इसे पढ़ने वाले उपभोक्ता हमेशा प्राकृतिक कृषि उत्पादों की मांग अवश्य करें। अपने आप देश में प्राकृतिक कृषि की क्रांति हो जाएगी।

पृष्ठ 2 का शेष

अंधविश्वास को बढ़ावा दे रहा है ...

यीशु उसे छुओ! बजिन्दर चिल्लाते हए कहते हैं, और वह आदमी भी जोर से चिल्लाता है। 'उठ जाओ!' बजिन्दर उस आदमी को आज्ञा देते हैं। भीड़ उत्साहपूर्ण 'हाल्लेलुजाह' के उच्चारण में व्यस्त हो जाती है, और ठीक इसी संकेत के बाद मंच पर प्रतीक्षा कर रहे बैंड-बाजे और गायक वाला दल एक फड़कता हुआ भक्ति गीत शुरू कर देता है। 'रोगी' भी थिरकते संगीत के बीच पादरी के साथ भांगड़ा-शैली के नृत्य में शामिल हो जाता है और यहां तक कि मंच के नीचे थोड़ा सा घूम-टहल भी लेता है।

इंटरनेट सोशल मीडिया पर आपको ऐसी ना जाने कितनी विडियो मिलेगी जहाँ लोग झूम रहे होते हैं। तभी शोर सुनाई पड़ता है, आस्तिक लोगों की भीड़ अचानक एक महिला के चारों ओर घेरा बना लेती है, थोड़ी देर पहले नॉर्मल लग रही वो महिला फटी हुई आवाज में बोलने लगती है। वह तेजी से झूमने भी लगती है। कुछ महिलाएं आगे बढ़कर उसके बाल खोल देती हैं। उसके माथे पर सिन्दूर की बड़ी-सी बिन्दी लगा दी जाती है। हरदम कपड़े संभालकर चलने वाली उस महिला को अब कपड़ों की सुध भी नहीं उसे सिर पर माता की चुनरी ओढ़ा दी जाती है और लोग नीचे बैठकर उसके पैर छूने लगते हैं। ऐसा कहा जाता है कि उस महिला पर देवी आ गई है। कुछ मिनटों या लगभग आधे घंटे तक देवी उसके शरीर में रहती है, फिर छू-मंतर हो जाती है।

यह सब कार्य भक्ति आस्था साधना के अधीन किये जा रहे हैं। अंधविश्वास के जो ठेकेदार अभी तक चुपके से अपना धंधा चला रहे थे। वो अब खुलकर सामने आ गये है। यानि जैसे-जैसे सोशल मीडिया शक्तिशाली होता जा रहा है, वैसे-वैसे सोशल मीडिया ये लोग भी शक्तिशाली होते जा रहे हैं। इनमें सिर्फ़ मशहूर बाबा ओलिया मोलिया या पादरी नहीं हैं (इनमें आम लोग भी शामिल हैं। जो सोशल मीडिया पर अदभुत जानकारी देने के बहाने बड़ी संख्या में फॉलोअर्स बनाते हैं। और लोगों रोचक विडियो दिखाने के साथ-साथ अंधविश्वास परोस रहे हैं।

थोड़े समय पहले तक सोशल मीडिया पर इन्फ्लुएंसर्स अनुभव, कौशल, ज्ञान की जानकारी देते थे। वे अपने लोगों के साथ संवाद करते थे और उनसे जुड़ते थे, व्यक्तिगत उपलब्धियों और असफलताओं को साझा करते थे, जिससे उन्हें अपने लक्षित दर्शकों से बेहतर तरीके से जुड़ने में मदद मिलती थी। धीरे-धीरे पिछले एक दशक में आम जन भी सोशल मीडिया से जुड़ा जहाँ आज कई-कई प्रभावशाली लोग व्यावहारिक कौशल जैसे डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट राइटिंग, कॉपीराइटिंग, एस ओ, फोटोग्राफी, कोडिंग और अन्य नौकरी बाजार की अनिवार्य चीजें सिखा रहे हैं। वहां बंगाली बाबा, मिशनरीज, ढोंगी पाखंडी लोगों ने भी अपना समूह तलाशा और उनके बीच अंधविश्वास से भरे विडियो डाले। दूसरे शब्दों में, पिछले कुछ सालों में सोशल मीडिया पर पाखंड फ़ैलाने वाले अविश्वसनीय रूप से लोकप्रिय हो गए हैं, और लोग उनकी ओर देखने लगे हैं। ये कथित बाबा, पाखंडी भूत-प्रेत के नाम पर परेशानी की नाम पर, आस्था के नाम पर, जब अंधविश्वास बेच ही रहे हैं तो आम लोग भी ऐसी ही विडियो बनाकर डालते हैं। जहाँ इंटरनेट जरिया बन सकता था ज्ञान विज्ञान का, ऐसे में इसका एक बड़ा कोना अंधविश्वास का अड्डा बन चुका है।

- सम्पादक

शोक समाचार

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी का निधन

आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार के विद्वान संन्यासी, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी का 11 जून, 2024 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से ऋषि नगर शमशान घाट में किया गया। उन्होंने अपने जीवन काल में आर्य सामाज के प्रचार प्रसार गुरुकुलों के सरंक्षण और युवाओं को सुदिशा प्रदान करने का अनुकरणीय कार्य किया।

श्रीमती शान्ति देवी ग्रोवर जी का निधन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के उप प्रधान श्री राजेन्द्र दुर्गा जी की मौसीजी श्रीमती शान्ति देवी ग्रोवर (धर्मपत्नी स्व. श्री सीताराम ग्रोवर) का 9 जून, 2024 को 91 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 12 जून, 2024 को आर्य समाज प्रशान्त विहार में सम्पन्न हुई।

श्री निरंजन लाल गर्ग जी का निधन

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के उप संचालक श्री पवन गर्ग के पूज्य पिता श्री निरंजन लाल गर्ग जी का 14 जून, 2024 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 25 जून, 2024 को महाराजा अग्रसेन भवन शंकर चौक, जय माता मार्केट, त्री नगर दिल्ली में सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 17 जून, 2024 से रविवार 23 जून, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 20-21-22/06/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19, जून, 2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

प्रतिष्ठा में,

प्रथम पुरस्कार : 1 लाख रुपये एवं विशेष उपहार।
द्वितीय पुरस्कार : 51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार : 31 हजार एवं विशेष उपहार (3)
चतुर्थ पुरस्कार : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा पुरस्कार : नकद 2100/- रुपये (100)
छठा पुरस्कार : नकद 1000/- रुपये (250)
सातवां पुरस्कार : नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।

2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)

3. प्रश्नपत्र को भरकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001'** के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।

4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।

5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।

6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **'साप्ताहिक आर्यसन्देश'** में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा द्वारा संचालित वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।

8. सभी पुरस्कार **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025'** में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।

9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह